अध्याय 3: संवादहीन

विषय-सूची 12 प्रश्नावली · 29 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय प्रश्न)	5 प्रश्न
प्रश्नावली 3.2	मेरी समझ मेरे विचार (बोध प्रश्न)	7 प्रश्न
प्रश्नावली 3.3	मेरे प्रश्न (उत्तर के लिए उपयुक्त प्रश्न पहचानना)	4 प्रश्न
प्रश्नावली 3.4	कहानी का सौंदर्य — विशेष बिंदु	5 प्रश्न
प्रश्नावली 3.5	कहानी का अंत (श्रेणी निर्धारण)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.6	विषयों से संवाद — मास्टराइन का नाम प्रश्न	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.7	व्याकरण की बात — मुहावरे (जीव-जंतु)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.8	व्याकरण की बात — ध्वन्यात्मकता	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.9	व्याकरण की बात — शब्द-युग्म	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.10	खोजबीन शब्दों की	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.11	अर्थ के आधार पर वाक्य (वाक्य के भेद)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 3.12	शब्द-संपदा (शब्दार्थ)	1 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1

कहानी में ताई और मिट्ठू का संबंध किस भाव को दर्शाता है? (क) परोपकार और त्याग (ख) ममता और स्नेह (ग) करुणा और क्रोध (घ) जिज्ञासा और सहायता

हल

सही उत्तर: (ख) ममता और स्नेह।
ताई मिट्ठू के लिए नियमपूर्वक दाल-भात बनाती हैं, उसके 'वक्त-बेवक्त के तकाजों' के लिए रोटी बचाकर रखती हैं और उसे देखकर उसे आशीर्वाद देती हैं — 'जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ।'
मिट्ठू भी 'कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!' कहकर ताई को दिलासा देता है।
यह संबंध परोपकार (किसी अनजान की मदद) नहीं बल्कि गहरी ममता और स्नेह पर आधारित है।
इसमें करुणा या क्रोध (ग) नहीं, बल्कि प्रेम और अपनापन है; जिज्ञासा (घ) भी इस संबंध का मूल भाव नहीं है।

उत्तर: (ख) ममता और स्नेह

प्रश्न 2

जगन मास्टर द्वारा मिट्ठू को पिंजरे से बाहर निकालना किस भावना या मूल्य का संकेत देता है? (क) अनुशासन और परंपरा (ख) उदासीनता और असावधानी (ग) आत्मगौरव और विद्रोह (घ) करुणा और नैतिकता

हल

सही उत्तर: (ग) आत्मगौरव और विद्रोह।
जगन मास्टर 'स्वतंत्र विचारों के आदमी थे' और 'दूसरों की स्वतंत्रता पर बाधा नहीं डालना चाहते थे।'
पिंजड़े में बंद मिट्ठू को देखकर उन्हें बेचैनी होती थी और वे अपनी पत्नी की बुद्धि पर तरस खाते और खुद को भी दोषी अनुभव करते थे।
उन्होंने पिंजरे का दरवाजा खोला 'ताशि उसे कुछ देर के लिए ही सही, खुली हवा में आने का मौका देकर अपने पाप का थोड़ा प्रायश्चित कर लें।'
यह कृत्य बंधन के विरुद्ध उनके नैतिक विद्रोह और आत्मगौरव की अभिव्यक्ति है।

उत्तर: (ग) आत्मगौरव और विद्रोह

प्रश्न 3

मिट्ठू का उड़ जाना किस विचार को प्रस्तुत करता है? (क) भोजन की खोज (ख) प्रेम की आकांक्षा (ग) स्वतंत्रता की चाह (घ) पक्षियों में सम्मान की प्रवृत्ति

हल

सही उत्तर: (ग) स्वतंत्रता की चाह।
मिट्ठू ने रोशनदान देखते ही 'सहज कौतूहलवश' ऊपर उड़ान भरी और बाहर की दुनिया की ओर देखकर उड़ गया।
यह दृश्य प्रत्येक प्राणी की जन्मजात स्वतंत्रता की चाह को दर्शाता है — पिंजड़े की आदत होने के बावजूद जब खुला आकाश दिखा तो प्रकृति के आह्वान ने उसे उड़ा दिया।
कहानी में भोजन (क) का संकेत नहीं है; प्रेम की आकांक्षा (ख) या पक्षी-सम्मान (घ) भी इस उड़ान का प्रमुख कारण नहीं।

उत्तर: (ग) स्वतंत्रता की चाह

प्रश्न 4

ताई के जीवन के दुख का मुख्य कारण क्या था? (क) सम्मान और प्रतिष्ठा में कमी आना (ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव (ग) आर्थिक विपन्नता और निर्धनता (घ) मिट्ठू के प्रति प्रेम और संवाद

हल

सही उत्तर: (ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव।
ताई के बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए, बेटियाँ अपनी-अपनी गृहस्थी में रम गईं।
खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं — धीरे-धीरे सब पराए हाथों में चला गया।
'सूने घर की भाँय-भाँय जैसे उन्हें काटने को दौड़ती थी।' — यही एकाकीपन और संवाद का अभाव उनके दुख का मूल कारण था।
पेट की समस्या (ग) तो उनके लिए कभी समस्या नहीं रही; आर्थिक दुख (ग) भी मुख्य कारण नहीं।

उत्तर: (ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव

प्रश्न 5

कहानी में मानव-समाज में व्याप्त किस विसंगति को उजागर किया गया है? (क) मजबूरी (ख) कर्मपरायणता (ग) अकेलापन (घ) संवादधर्मिता

हल

सही उत्तर: (ग) अकेलापन।
कहानी की भूमिका में भी स्पष्ट है — यह 'ग्रामीण वृद्ध स्त्री के अकेलेपन की संवेदनशील कहानी है।'
ताई का बड़ा परिवार था, किंतु बच्चे शहरों में चले गए और वे सूने खंडहर में अकेली रह गईं।
यह आधुनिक समाज का यथार्थ है जहाँ परिवार बिखर जाते हैं और बुजुर्ग एकाकी रह जाते हैं।
शीर्षक 'संवादहीन' भी इसी अकेलेपन और संवाद के अभाव को इंगित करता है।

उत्तर: (ग) अकेलापन

प्रश्नावली 3.2 — मेरी समझ मेरे विचार (बोध प्रश्न)

प्रश्न 1

"भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?" ताई इस वाक्य में किस 'नैया' की बात कर रही हैं? वे यह बात क्यों कह रही हैं?

हल

ताई यहाँ 'नैया' शब्द का प्रयोग जीवन-नौका के अर्थ में करती हैं — उनके जीवन की नाव जो बुढ़ापे में अकेलेपन के सागर में डगमगा रही है।
ताई का परिवार बिखर गया है — बहू-बेटे शहरों में हैं, बेटियाँ अपनी गृहस्थी में रम गईं, नौकर-चाकर जा चुके हैं।
सूने खंडहर में अकेली वृद्ध ताई यह सोचकर कि आगे का जीवन कैसे कटेगा, भगवान से प्रश्न करती हैं।
यह संवाद कहानी की प्रथम पंक्ति में है — इससे स्पष्ट होता है कि ताई का अकेलापन उनके जीवन की सबसे बड़ी पीड़ा है।

उत्तर: ताई 'नैया' से अपनी जीवन-नौका की बात करती हैं — बुढ़ापे में परिवार के बिखर जाने के बाद वे अकेलेपन में जीवन कैसे बिताएंगी, यही उनकी पीड़ा है।

प्रश्न 2

"धीरे-धीरे सब पराए हाथ में चला गया।" इस वाक्य में किस घटना की ओर संकेत किया गया है?

हल

यह वाक्य ताई के संपूर्ण जीवन की त्रासदी का सारांश है।
ताई के बड़े घर में कभी पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर, गाय-ढोर सब थे।
बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए; बेटियाँ हाथ पीले कराकर अपनी गृहस्थी में रम गईं।
जब खेती-बाड़ी और कारबार किसी के भरोसे न रहा, तो वह 'पराए हाथों में' चला गया।
इस प्रकार संपत्ति, परिवार और सारी जिम्मेदारियाँ — सब धीरे-धीरे हाथ से निकल गईं और ताई एकाकी रह गईं।

उत्तर: इस वाक्य में ताई के परिवार के बिखरने और उनकी संपत्ति-कारबार सब पराए हाथों में चले जाने की घटना की ओर संकेत है।

प्रश्न 3

"ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी।" क्यों?

हल

ताई का परिवार बिखर गया था — बहू-बेटे शहरों में, बेटियाँ अपनी गृहस्थी में। सूना घर उन्हें 'काटने को दौड़ता' था।
रनपत उनके लिए एक पहाड़ी तोता ले आया जो प्यारा-सा था।
जिस प्रेम और ममता को बाँटने के लिए परिवार का कोई सदस्य न बचा था, वह सारा प्रेम मिट्ठू पर उमड़ पड़ा।
मिट्ठू संवाद का माध्यम बन गया — ताई की बात का जवाब देता था, रोती हुई ताई को 'कटेगी! कटेगी!!' कहकर

दिलासा देता था।

इस प्रकार मिट्ठू ताई के एकाकीपन का एकमात्र साथी बन गया और उनकी सारी ममता उसी पर केंद्रित हो गई।

उत्तर: बहू-बेटों के शहर चले जाने के बाद ताई का घर सूना हो गया। जब रनपत मिट्ठू को लाया तो बिखरे परिवार के प्रति उमड़ती ममता का सारा प्रेम मिट्ठू पर बरस पड़ा क्योंकि वही उनका एकमात्र संवाद-साथी बन गया।

प्रश्न 4

"अब ताई को इस बात की पूरी जानकारी रहने लगी थी कि किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हो रही हैं और किस पेड़ में फसल के आखिरी अमरूद बचे हैं।" इस वाक्य द्वारा ताई के व्यक्तित्व में आए परिवर्तनों के विषय में क्या-क्या पता चलता है?

हल

पहले ताई अपनी खातिर चूल्हा जलाने में भी आलस्य करती थीं।

मिट्ठू के आने के बाद उन्होंने पड़ोस के खेतों और पेड़ों पर नज़र रखनी शुरू कर दी — मिट्ठू की पसंद के ताजा फल-सब्जियाँ लाने के लिए।

इससे पता चलता है कि मिट्ठू ने ताई में एक नई सक्रियता, जागरूकता और बाहरी दुनिया से जुड़ाव उत्पन्न कर दिया।

दूसरे की परवाह करने की जो प्रवृत्ति थी, वह मिट्ठू के लिए पूरी तरह जाग उठी।

ताई का व्यक्तित्व बंद और निष्क्रिय से खुला और सक्रिय हो गया — यह प्रेम और अपनेपन की शक्ति को दर्शाता है।

उत्तर: मिट्ठू के आने से ताई में नई सक्रियता आई — वे जो पहले अपने लिए खाना पकाने में आलस्य करती थीं, अब मिट्ठू की पसंद के लिए आस-पड़ोस के खेत-बाग की जानकारी रखने लगीं। यह उनके व्यक्तित्व में प्रेम-जनित जागरूकता का परिवर्तन है।

प्रश्न 5

"जगन मास्टर दूसरे मिजाज के आदमी थे।" जगन मास्टर का व्यक्तित्व कैसा था? कहानी में से उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

हल

जगन मास्टर स्वतंत्र विचारों के आदमी थे। उन्होंने कुछ नियम-सिद्धांत बना रखे थे और भरसक कोशिश करते थे कि उनसे किसी को कष्ट न पहुँचे।

वे दूसरों की स्वतंत्रता पर बाधा नहीं डालना चाहते थे — पिंजड़े में बंद मिट्ठू को देखकर उन्हें बेचैनी होती थी।

उन्होंने 'प्रायश्चित' करने के लिए कमरा बंद करके पिंजरे का दरवाजा खोल दिया — यह उनकी नैतिकता और आत्मगौरव का प्रमाण है।

मिट्ठू के उड़ जाने के बाद वे अपनी चिंता में खाना-पीना भूलकर नए तोते को घंटों 'राम राम सीताराम' रटाने लगे — यह उनकी जिम्मेदारी के बोध को दर्शाता है।

वे 'धुन के पक्के' थे — जो ठान लिया वह करके ही माने, चाहे वह आदर्श के कारण मिट्ठू को छोड़ना हो या ताई को बचाने के लिए नया तोता सिखाना हो।

उत्तर: जगन मास्टर स्वतंत्र विचारों, नैतिकता और आत्मगौरव वाले व्यक्ति थे। उन्होंने मिट्ठू को प्रायश्चित-स्वरूप मुक्त किया, फिर जिम्मेदारी भाव से नए तोते को घंटों रटाने में जुट गए।

प्रश्न 6

कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' किसके लिए सबसे अधिक सार्थक प्रतीत होता है — ताई, जगन मास्टर, मिट्ठू या नया तोता? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

हल

'संवादहीन' शीर्षक सबसे अधिक ताई के लिए सार्थक प्रतीत होता है।
ताई का पूरा जीवन संवाद की तलाश में बीता — पहले परिवार से, फिर मिट्ठू से।
परिवार के जाने के बाद सूने घर में मिट्ठू ही एकमात्र संवाद का माध्यम था।
मिट्ठू के उड़ जाने के बाद एवजी (नकली) तोता ताई को देखकर 'कोई हरकत नहीं करता' — संवाद पूरी तरह समाप्त हो गया।
जगन मास्टर का जीवन संवाद से भरा था; मिट्ठू स्वयं बोलता था; नया तोता सीखने की कोशिश में था — केवल ताई के जीवन में संवाद का स्थायी और गहरा अभाव था।
यह कहानी ग्रामीण वृद्ध स्त्री के अकेलेपन की कहानी है — और यही 'संवादहीनता' उसकी मूल वेदना है।

उत्तर: 'संवादहीन' शीर्षक सबसे अधिक ताई के लिए सार्थक है — परिवार से संवाद टूटा, फिर मिट्ठू गया, और नया तोता चुप रहा। उनका समूचा जीवन संवाद के अभाव की त्रासदी है।

प्रश्न 7

"अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह रहे थे।" ताई के बड़े से घर को सूना खंडहर क्यों कहा गया होगा?

हल

ताई के घर में कभी पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर और गाय-ढोर सब कुछ था।
बहू-बेटे शहर चले गए, बेटियाँ ब्याह कर चली गईं, नौकर-चाकर छोड़ गए, खेती-बाड़ी और कारबार भी पराए हाथों में चला गया।
अब केवल ताई और मिट्ठू रह गए थे — इतने बड़े घर में सिर्फ दो 'प्राणी'।
घर भले ही शारीरिक रूप से खड़ा था, किंतु उसमें न रौनक थी, न परिवार का कोलाहल, न जीवन की गतिविधि।
ऐसे जीर्ण-शीर्ण, निर्जन और निष्प्राण घर को ही 'सूना खंडहर' कहा जाता है — यहाँ 'खंडहर' भौतिक अर्थ में नहीं, बल्कि जीवन-शक्ति और संबंधों के ध्वंस के अर्थ में है।

उत्तर: ताई का घर कभी भरा-पूरा था, किंतु परिवार के बिखर जाने के बाद वह जीवन-शक्तिहीन हो गया। इसलिए उसे 'सूना खंडहर' कहा गया — भवन तो था, पर परिवार का कोलाहल और जीवन दोनों समाप्त हो चुके थे।

प्रश्नावली 3.3 — मेरे प्रश्न (उत्तर के लिए उपयुक्त प्रश्न पहचानना)

प्रश्न 1

उत्तर: ताई के अकेलेपन को मिट्ठू ने सहारा दिया। प्रश्न क: ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था? प्रश्न ख: ताई को मिट्ठू किसने भेंट में दिया था? इनमें से कौन-सा प्रश्न इस उत्तर के लिए उपयुक्त है?

हल

उपयुक्त प्रश्न: प्रश्न क — 'ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था?'
उत्तर में 'अकेलेपन को सहारा देने' की बात है; प्रश्न क में 'सूनेपन को सहारा देने' का प्रश्न है — दोनों एक ही अर्थ को इंगित करते हैं।
प्रश्न ख ('भेंट में दिया') गलत है क्योंकि उत्तर में भेंट देने वाले की बात नहीं है — रनपत ने तोता लाया था, पर उत्तर में उल्लेख किसने सहारा दिया इसका है।

उत्तर: प्रश्न क — 'ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था?' यह उत्तर के लिए उपयुक्त है।

प्रश्न 2

उत्तर: ताई के लौटने से पहले मिट्ठू उड़ गया था। प्रश्न क: ताई के लौटने के बाद मिट्ठू कहाँ चला गया था? प्रश्न ख: ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई? इनमें से कौन-सा प्रश्न इस उत्तर के लिए उपयुक्त है?

हल

उपयुक्त प्रश्न: प्रश्न ख — 'ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई?'
उत्तर में दो बातें हैं: (1) ताई के लौटने से पहले की घटना, और (2) मिट्ठू का उड़ना।
प्रश्न ख में 'लौटने से पहले' और 'अनहोनी' दोनों की ओर संकेत है — यह उत्तर को ठीक से इंगित करता है।
प्रश्न क ('लौटने के बाद') गलत दिशा में पूछता है — उत्तर 'लौटने से पहले' की बात करता है।

उत्तर: प्रश्न ख — 'ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई?' यह उत्तर के लिए उपयुक्त है।

प्रश्न 3

उत्तर: गाँववालों को डर था कि ताई को सच्चाई जानकर सदमा लगेगा। प्रश्न क: गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे? प्रश्न ख: गाँववाले मिट्ठू के उड़ने से खुश क्यों थे? इनमें से कौन-सा प्रश्न इस उत्तर के लिए उपयुक्त है?

हल

उपयुक्त प्रश्न: प्रश्न क — 'गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे?'
उत्तर में गाँववालों की चिंता और डर का उल्लेख है — वे ताई की वापसी से इसलिए चिंतित थे क्योंकि मिट्ठू उड़ गया था और सच्चाई जानकर ताई को सदमा लग सकता था।
प्रश्न ख ('खुश क्यों थे') उत्तर के अर्थ के विपरीत है — उत्तर में गाँववालों की चिंता की बात है, खुशी की नहीं।

उत्तर: प्रश्न क — 'गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे?' यह उत्तर के लिए उपयुक्त है।

प्रश्न 4

उत्तर: कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' जीवन के मौन का प्रतीक है। प्रश्न क: कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' क्यों उपयुक्त नहीं है? प्रश्न ख: शीर्षक 'संवादहीन' का क्या भावार्थ है? इनमें से कौन-सा प्रश्न इस उत्तर के लिए उपयुक्त है?

हल

उपयुक्त प्रश्न: प्रश्न ख — 'शीर्षक "संवादहीन" का क्या भावार्थ है?'
उत्तर शीर्षक का भावार्थ बता रहा है — कि यह जीवन के मौन का प्रतीक है।
प्रश्न ख सीधे भावार्थ पूछता है, इसलिए यह उपयुक्त है।
प्रश्न क ('उपयुक्त क्यों नहीं') उत्तर के विरुद्ध है — उत्तर तो शीर्षक का अर्थ बता रहा है, यह नहीं कह रहा कि वह उपयुक्त नहीं है।

उत्तर: प्रश्न ख — 'शीर्षक "संवादहीन" का क्या भावार्थ है?' यह उत्तर के लिए उपयुक्त है।

प्रश्नावली 3.4 — कहानी का सौंदर्य — विशेष बिंदु

प्रश्न 1

कहानी में 'दृश्य बिंब' (चित्रात्मकता) का उदाहरण दिया गया है: उदाहरण: मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे। कहानी से इसी प्रकार का एक और उदाहरण खोजिए।

हल

दृश्य बिंब (चित्रात्मकता) का एक और उदाहरण: 'सुबह पौ फटने लगती, पेड़ों में चिड़ियाँ चहचहातीं तो मिट्ठू भी जैसे ताई को भोर की झपकी से जगाने के लिए ही अपना पाठ शुरू कर देते।'
इस वाक्य में पाठक के मन में भोर का चित्र बनता है — पेड़ों में चिड़ियाँ, चहचहाहट, और मिट्ठू का प्रभातकालीन पाठ — एक जीवंत दृश्य उत्पन्न होता है।

उत्तर: 'सुबह पौ फटने लगती, पेड़ों में चिड़ियाँ चहचहातीं तो मिट्ठू भी जैसे ताई को भोर की झपकी से जगाने के लिए ही अपना पाठ शुरू कर देते।' — यह दृश्य बिंब का उदाहरण है।

प्रश्न 2

कहानी में 'संवादात्मकता' का उदाहरण दिया गया है: उदाहरण: "राम-राम कहो, सीताराम कहो।" कहानी से इसी प्रकार का एक और उदाहरण खोजिए।

हल

संवादात्मकता का एक और उदाहरण: '"मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?" और नौजवान मिट्ठू ताई के बुढ़ापे का सहारा बनकर दम-खम के साथ उन्हें दिलासा देते — "कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!"'
यहाँ ताई और मिट्ठू के बीच का सीधा संवाद कथ्य को आगे बढ़ाता है और दोनों पात्रों के स्नेह एवं निर्भरता को व्यक्त करता है।

उत्तर: "मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?" — "कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!" — यह संवादात्मकता का उदाहरण है।

प्रश्न 3

कहानी में 'पुनरुक्ति' (शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति) का उदाहरण दिया गया है: उदाहरण: "कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!" कहानी से इसी प्रकार का एक और उदाहरण खोजिए।

हल

पुनरुक्ति का एक और उदाहरण: '"हर हर गंगे! हर हर गंगे!! / सीताराम बोल! सीताराम बोल!! / मिट्ठू राम राम! मिट्ठू राम राम!!"'
यहाँ शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति से मिट्ठू का पाठ जपने का भाव और ताई को प्रातःकाल जगाने की तीव्रता प्रकट होती है।

उत्तर: "हर हर गंगे! हर हर गंगे!!" — यह पुनरुक्ति का उदाहरण है जहाँ शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति से भाव की तीव्रता प्रकट होती है।

प्रश्न 4

कहानी में 'अतिशयोक्ति' का उदाहरण दिया गया है: उदाहरण: रेलगाड़ी में उसका भी टिकट लगेगा, आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है। कहानी से इसी प्रकार का एक और उदाहरण खोजिए।

हल

अतिशयोक्ति का एक और उदाहरण: 'ताई सोच रही थीं कि उन्हें देखते ही मिट्ठू "राम राम सीताराम" की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा।'
यहाँ 'आसमान सिर पर उठाना' अतिशयोक्ति है — मिट्ठू की आवाज़ इतनी तेज नहीं हो सकती कि आसमान उठ जाए, किंतु इस अतिशयोक्ति से ताई की उत्सुकता और मिट्ठू के स्वागत-रव की कल्पना जीवंत हो उठती है।

उत्तर: 'ताई सोच रही थीं कि उन्हें देखते ही मिट्ठू "राम राम सीताराम" की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा।' — यह अतिशयोक्ति का उदाहरण है।

प्रश्न 5

कहानी में 'लोकधर्मी भाषा' (ग्रामीण, सहज, बोल-चाल की भाषा) और 'प्रश्नोत्तर शैली' के उदाहरण दिए गए हैं: लोकधर्मी भाषा का उदाहरण — (पाठ में से खोजिए) प्रश्नोत्तर शैली का उदाहरण — "भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?" / "मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?" कहानी से लोकधर्मी भाषा का एक उदाहरण खोजिए।

हल

लोकधर्मी भाषा का उदाहरण: 'अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेतीं, व्रत-उपवास के बहाने चौका-चूल्हा टाल जातीं।'
यहाँ 'दो जून का एक जून', 'चूल्हा फूँकना', 'व्रत-उपवास के बहाने' — ये सभी ग्रामीण जीवन की सहज बोल-चाल की भाषा के उदाहरण हैं।

उत्तर: 'अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेतीं, व्रत-उपवास के बहाने चौका-चूल्हा टाल जातीं।' — यह लोकधर्मी भाषा का उदाहरण है।

प्रश्नावली 3.5 — कहानी का अंत (श्रेणी निर्धारण)

प्रश्न 1

पाठ में कहानी के अंत की सात श्रेणियाँ दी गई हैं: 1. सुखांत – अंत प्रसन्नता, सफलता से होता है। 2. दुखांत – अंत दुख, वियोग, मृत्यु या हानि से होता है। 3. मुक्त अंत – कहानी स्पष्ट रूप से खत्म नहीं होती, सोचने के लिए छोड़ी जाती है। 4. अप्रत्याशित अंत – अंत अचानक और अप्रत्याशित रूप से सामने आता है। 5. यथार्थवादी अंत – अंत जीवन की सच्चाई जैसा लगे। 6. प्रेरणात्मक अंत – अंत में कोई प्रेरणा या सकारात्मक सोच दी जाए। 7. व्यंग्यात्मक अंत – अंत व्यंग्य या कटाक्ष से किसी सत्य को प्रकट करता है। आपके अनुसार 'संवादहीन' कहानी के अंत को किस श्रेणी में रखा जा सकता है? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

हल

'संवादहीन' कहानी का अंत 'व्यंग्यात्मक अंत' (श्रेणी 7) की श्रेणी में आता है।

कहानी का अंत इस प्रकार है — ताई को असली मिट्ठू की जगह एक एवजी (नकली) तोता दे दिया जाता है ताकि उन्हें धोखे में रखा जा सके।

जब ताई लौटकर आती हैं तो 'वहाँ बैठे एवजी मिट्ठू ने उन्हें देखकर कोई हरकत नहीं की' — न राम-राम, न सीताराम।

यह व्यंग्य है — जिस संवाद की तलाश में ताई ने सारी जिंदगी बिताई, जो उनके जीने का आधार था, उसके स्थान पर एक मूक प्रतिस्थापन आ गया।

यह मानव-समाज पर गहरा कटाक्ष है कि लोग सच छुपाकर किसी को 'खुश' रखने की कोशिश करते हैं, पर संवाद को नहीं बचा सकते।

व्यंग्यात्मक अंत में कटाक्ष के माध्यम से सत्य प्रकट होता है — यहाँ सत्य यह है कि आधुनिक समाज में संवाद की जगह प्रतिस्थापन (substitute) ले लेता है, पर वह संवाद का विकल्प नहीं बन सकता।

उत्तर: 'संवादहीन' का अंत 'व्यंग्यात्मक अंत' है। गाँव वाले असली मिट्ठू की जगह नकली तोता रखकर ताई को धोखा देते हैं — यह मानव-समाज पर कटाक्ष है कि संवाद को प्रतिस्थापन से नहीं बचाया जा सकता।

प्रश्नावली 3.6 — विषयों से संवाद — मास्टराइन का नाम प्रश्न

प्रश्न 1

"अंत में जगन मास्टर की घरवाली ने उनकी चिंता दूर कर दी।" कहानी में रेखांकित पात्र का नाम नहीं दिया गया है। इसे कहीं 'मास्टराइन', तो कहीं 'जगन मास्टर की घरवाली' कहा गया है। आपके अनुसार कहानी में ऐसा क्यों किया गया होगा?

हल

लेखक ने मास्टराइन को नाम नहीं दिया, जो ग्रामीण समाज की एक वास्तविकता को उजागर करता है।
ग्रामीण भारत में महिलाओं की अपनी अलग पहचान प्रायः नहीं होती — वे अपने पति के नाम से ही जानी जाती हैं: 'मास्टर की घरवाली', 'जगन मास्टर की पत्नी' आदि।
लेखक इस परंपरा पर व्यंग्य करते हुए स्त्री की स्वतंत्र पहचान के अभाव को रेखांकित कर रहा है।
यह उसी 'संवादहीनता' का विस्तार है — जैसे ताई का अकेलापन, वैसे ही मास्टराइन का नाम-रहित अस्तित्व।
कहानी का शीर्षक और यह प्रसंग दोनों एक ही सामाजिक सत्य की ओर इशारा करते हैं।

उत्तर: लेखक ने जानबूझकर मास्टराइन को नाम नहीं दिया — यह ग्रामीण समाज में महिलाओं की पृथक पहचान के अभाव पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी है। वे 'पति की घरवाली' बनकर ही जानी जाती हैं।

प्रश्नावली 3.7 — व्याकरण की बात — मुहावरे (जीव-जंतु)

प्रश्न 1

'मिट्ठू' शब्द का अर्थ होता है — मधुरभाषी, मीठा बोलनेवाला या तोता। पाठ में दिया गया उदाहरण वाक्य है: "अकेले मिट्ठू क्या उड़े, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए।" (यहाँ 'तोते उड़ना' एक मुहावरा है।) ऐसे कुछ मुहावरों की सूची बनाइए जिनमें किसी अन्य जीव-जंतु का उल्लेख किया गया हो।

हल

जीव-जंतुओं वाले प्रमुख मुहावरे:

1. कुत्ते की मौत मरना — बहुत बुरी तरह मरना।
2. बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना — बिना प्रयास के लाभ मिलना।
3. घोड़े बेचकर सोना — निश्चिंत होकर गहरी नींद सोना।
4. मगरमच्छ के आँसू बहाना — झूठी सहानुभूति दिखाना।
5. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद — अयोग्य व्यक्ति गुणग्राहकता नहीं जानता।
6. आँखों में धूल झोंकना — छलकर धोखा देना (इसमें जीव-जंतु नहीं है — यह केवल संदर्भ के लिए)।
7. चिड़िया उड़ जाना — अवसर हाथ से निकल जाना।
8. दाल में काला होना — संदेह की बात होना (काला = मुहावरे में कोई भी जीव नहीं — यह उदाहरण नहीं लेना)।
9. भेड़िया धसान होना — अंधानुकरण।
10. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना — स्वयं की प्रशंसा आप करना।

नोट: 'उल्टे बाँस बरेली को' मुहावरे में 'बाँस' एक पौधा है, जीव-जंतु नहीं, अतः यह इस सूची में नहीं आता।

उत्तर: जीव-जंतु वाले मुहावरे: 'कुत्ते की मौत मरना', 'बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना', 'घोड़े बेचकर सोना', 'मगरमच्छ के आँसू बहाना', 'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद', 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना'।

प्रश्नावली 3.8 — व्याकरण की बात — ध्वन्यात्मकता

प्रश्न 1

पाठ में दिया गया उदाहरण: "जगन मास्टर का ध्यान अचानक 'गीता-रहस्य' से हटकर मिट्ठू के पंखों की 'फड़फड़ाहट' पर गया।" — 'फड़फड़ाहट' एक ध्वन्यात्मक शब्द है जो पक्षी के उड़ने पर पंखों के हिलने-डुलने से उत्पन्न ध्वनि का आभास कराता है। ऐसे कुछ और ध्वन्यात्मक शब्द लिखिए और उनसे नए वाक्य बनाइए।

हल

ध्वन्यात्मक शब्द और वाक्य:

1. चहचहाना — सुबह-सुबह पेड़ों पर चिड़ियाँ चहचहा रही थीं।
2. कड़कड़ाना — बादल कड़कड़ाए और बारिश शुरू हो गई।
3. सनसनाना — तेज हवा सनसनाते हुए चली और पत्ते उड़ने लगे।
4. खड़खड़ाना — हवा से खिड़की खड़खड़ाने लगी।
5. छपछपाना — बच्चे पोखर में छपछपाते हुए खेल रहे थे।
6. गुनगुनाना — माँ रसोई में गाना गुनगुना रही थी।
7. सरसराना — साँप के सरसराने की आवाज़ सुनकर सब डर गए।

उत्तर: ध्वन्यात्मक शब्द: चहचहाना, कड़कड़ाना, सनसनाना, खड़खड़ाना, छपछपाना, गुनगुनाना, सरसराना।

प्रश्नावली 3.9 — व्याकरण की बात — शब्द-युग्म

प्रश्न 1

पाठ में से चुनकर दिए गए शब्द-युग्मों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए: वक्त-बेवक्त, नियम-सिद्धांत, शादी-ब्याह, तीज-त्योहार

हल

1. वक्त-बेवक्त — उचित समय पर या बिना किसी समय की परवाह किए; कभी भी। वाक्य: मिट्ठू वक्त-बेवक्त के तकाजों के लिए ताई रोटी बचाकर रखती थीं।
2. नियम-सिद्धांत — जीवन के नियम और आदर्श। वाक्य: जगन मास्टर के अपने नियम-सिद्धांत थे जिनके कारण वे दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहते थे।
3. शादी-ब्याह — विवाह समारोह और उससे जुड़े उत्सव। वाक्य: शादी-ब्याह के मौके पर पूरा गाँव इकट्ठा हो जाता था।
4. तीज-त्योहार — त्योहार और उत्सव के दिन। वाक्य: तीज-त्योहार के मौके पर ताई के घर में भी पहले बहुत रौनक रहती थी।

उत्तर: वक्त-बेवक्त = उचित-अनुचित समय; नियम-सिद्धांत = जीवन के आदर्श और नियम; शादी-ब्याह = विवाह उत्सव; तीज-त्योहार = त्योहार के दिन।

प्रश्नावली 3.10 — खोजबीन शब्दों की

प्रश्न 1

नीचे दिए गए अनुच्छेद में से खोजिए — "ढीली धोती को दोनों हाथों से सँभालते हुए वह बाग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ के पास, 'मिट्ठू आ! मिट्ठू आ!!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे और मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।" • ऐसा शब्द जो 'तंग' का विपरीतार्थक है। • ऐसा वाक्यांश जो एक मुहावरा है। • ऐसा शब्द जो एक क्रिया है। • ऐसा शब्द जो एक संज्ञा है। • ऐसा शब्द जो एक सर्वनाम है। • ऐसा शब्द जो एक विशेषण है। • ऐसा शब्द जो एक कारक है। • ऐसा शब्द जो एक कर्ता है।

हल

'तंग' का विपरीतार्थक शब्द: 'ढीली' — ('ढीली धोती' में — 'तंग' का अर्थ है कसी हुई, इसका विपरीत है 'ढीली')।
मुहावरा (वाक्यांश): 'पसीना-पसीना होना' — अर्थात बहुत थक जाना या परिश्रम करना।
क्रिया: 'सँभालते' (सँभालना क्रिया का वर्तमान कृदंत रूप)।
संज्ञा: 'धोती' (वस्त्र, भौतिक वस्तु = जातिवाचक संज्ञा)।
सर्वनाम: 'वह' (जगन मास्टर के लिए प्रयुक्त तृतीय पुरुष एकवचन सर्वनाम)।
विशेषण: 'ढीली' (धोती का गुण बताने वाला शब्द — विशेषण)।
कारक: 'में' (बाग में — अधिकरण कारक; पेड़ से — अपादान कारक; हाथों से — करण कारक)।
कर्ता: 'वह' (जगन मास्टर — जो सँभालते हुए पुकारते रहे)।

उत्तर: तंग का विपरीत: ढीली; मुहावरा: पसीना-पसीना होना; क्रिया: सँभालते; संज्ञा: धोती; सर्वनाम: वह; विशेषण: ढीली; कारक: में/से; कर्ता: वह।

प्रश्नावली 3.11 — अर्थ के आधार पर वाक्य (वाक्य के भेद)

प्रश्न 1

पाठ में अर्थ के आधार पर आठ प्रकार के वाक्य बताए गए हैं। पाठ में उदाहरण दिया गया है: 1. विधानवाचक — "जगन मास्टर ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।" 2. निषेधवाचक — "मिट्ठू ने कोई हरकत नहीं की।" 3. प्रश्नवाचक — "मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?" 4. विस्मयादिबोधक — "मिट्ठू ने फिर तिरछी आँख से रोशनदान के बाहर की दुनिया की ओर देखा और ये गए! वो गए!!" 5. आज्ञावाचक — "राम-राम कहो, सीताराम कहो।" 6. इच्छावाचक — "जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ!" 7. संदेहवाचक — "ताई के सूनेपन का सारी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।" 8. संकेतवाचक — "जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते!" अब आप भी अपनी पुस्तक में से प्रत्येक प्रकार का एक-एक वाक्य चुनकर लिखिए।

हल

1. विधानवाचक: 'ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी।' (किसी घटना या स्थिति का कथन)
2. निषेधवाचक: 'ताई को घड़ी-भर के लिए भी मिट्ठू का वियोग सहन नहीं हो सकता था।' (न होने का भाव)
3. प्रश्नवाचक: 'भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?' (प्रश्न पूछना)
4. विस्मयादिबोधक: 'कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!' (आश्चर्य/उत्साह का भाव)
5. आज्ञावाचक: 'मर जा! मर जा! मर जा!' (आदेश — जब ताई खीझकर मिट्ठू को डाँटती हैं)
6. इच्छावाचक: 'जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ!' (आशा/इच्छा का भाव)
7. संदेहवाचक: 'शायद उनकी बेवकूफी पर हँसता रहा हो।' (अनिश्चितता का भाव)
8. संकेतवाचक: 'जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते!' (एक घटना का दूसरी पर निर्भर होना)

उत्तर: विधानवाचक: ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी। निषेधवाचक: ताई को मिट्ठू का वियोग सहन नहीं हो सकता था। प्रश्नवाचक: भगवान! कैसे नैया पार लगेगी? विस्मयादिबोधक: कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!! आज्ञावाचक: मर जा! मर जा! इच्छावाचक: जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ! संदेहवाचक: शायद उनकी बेवकूफी पर हँसता रहा हो। संकेतवाचक: जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते!

प्रश्नावली 3.12 — शब्द-संपदा (शब्दार्थ)

प्रश्न 1

पाठ में दी गई शब्द-संपदा में निम्नलिखित शब्दों के अर्थ दिए गए हैं। इन शब्दों और उनके अर्थों का मिलान कीजिए: शब्द — ढोर, तकाजा, कुशाग्र, पौ फटना, अचकचाना, निहाल, सत्ता, अतल, प्रसंग, रोबीला, तुनकमिजाज, वियोग, साँकल, टोह, देहरी/देहली, मिजाज, प्रायश्चित, कौतूहलवश, मशगूल, अर्जन, एवजी, आग्नेय, जून अर्थ — पालतू गोजातीय पशुओं के लिए प्रयुक्त शब्द/चौपाया/डंगर; आवश्यकता/इच्छा/अनुरोध/बार-बार माँगना; तीव्र/कुश की नोंक जैसा तीक्ष्ण; प्रातःकाल का प्रकाश/तड़का होना; भौचक्का होना/चौंक उठना; प्रसन्न/हर तरह से तृप्त; अस्तित्व/यथार्थता/अधिकार/प्रभुत्व; अथाह/तलहीन; प्रकरण/संबंध/विषय का तारतम्य; प्रभावशाली; जो छोटी-छोटी बातों पर नाराज हो जाए/नाजुकमिजाज; विच्छेद/विरह/अभाव; जंजीर/सिकड़ी/श्रृंखला; खोज/अनुसंधान/पता; दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी; स्वभाव/तबीयत/प्रकृति; शोधन/पाप का मार्जन करने के लिए शास्त्र-विहित कर्म; उत्सुकता/अचंभा/कुतूहल से; कार्यरत/किसी काम में लगा हुआ; कमाना/संग्रह करना; बदले में काम करने वाला/स्थानापन्न; अग्नि से उत्पन्न/अग्नि जैसा; वक्त/वेला/दिन का अर्ध भाग

हल

ढोर — पालतू गोजातीय पशुओं के लिए प्रयुक्त शब्द, चौपाया, डंगर।
तकाजा — आवश्यकता, इच्छा, अनुरोध, कोई काम करने के लिए किसी से बार-बार कहना, माँगना।
कुशाग्र — तीव्र, कुश की नोंक जैसा तीक्ष्ण।
पौ फटना — प्रातःकाल का प्रकाश, तड़का होना।
अचकचाना — भौचक्का होना, चौंक उठना।
निहाल — प्रसन्न, हर तरह से तृप्त।
सत्ता — अस्तित्व, यथार्थता, अधिकार, प्रभुत्व, प्रभुसत्ता।
अतल — अथाह, तलहीन।
प्रसंग — प्रकरण, संबंध, विषय का तारतम्य, एक प्रकार की संगति, लगाव।
रोबीला — प्रभावशाली।
तुनकमिजाज — जो झटपट या छोटी-छोटी बातों पर नाराज हो जाए, नाजुकमिजाज, चिड़चिड़ा।
वियोग — विच्छेद, विरह, अभाव, छुटकारा।
साँकल — जंजीर, सिकड़ी, श्रृंखला।
टोह — खोज, अनुसंधान, पता, देखभाल।
देहरी/देहली — दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लाँघकर घर में घुसते-निकलते हैं।
मिजाज — स्वभाव, तबीयत, प्रकृति, आदत, रंग, घमंड।
प्रायश्चित — शोधन, वह शास्त्र-विहित कर्म जो पाप का मार्जन करने के लिए किया जाए।
कौतूहलवश — उत्सुकता, अचंभा, कुतूहल के कारण।
मशगूल — कार्यरत, किसी काम या शगल में लगा हुआ।
अर्जन — कमाना, संग्रह करना।
एवजी — बदले में काम करने वाला, स्थानापन्न।

आग्नेय — अग्नि से उत्पन्न, अग्नि जैसा, अग्नि-संबंधी।

जून — वक्त, वेला, दिन का अर्ध भाग, ईसवी सन् का छठा महीना।

उत्तर: ढोर = चौपाया; तकाजा = बार-बार माँगना; कुशाग्र = तीव्र; पौ फटना = तड़का; अचकचाना = चौंकना; निहाल = प्रसन्न/तृप्त; सत्ता = अस्तित्व; अतल = अथाह; प्रसंग = प्रकरण; रोबीला = प्रभावशाली; तुनकमिजाज = चिड़चिड़ा; वियोग = विरह; साँकल = जंजीर; टोह = खोज; देहरी = दरवाजे की चौखट; मिजाज = स्वभाव; प्रायश्चित = पाप का शोधन; कौतूहलवश = उत्सुकता से; मशगूल = लगा हुआ; अर्जन = कमाना; एवजी = स्थानापन्न; आग्नेय = अग्नि से उत्पन्न; जून = वेला।